

अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

2016-2017

## शोध समिति

—डॉ. श्रीमती स्मृति शुक्ला

महाविद्यालय की शोध समिति महाविद्यालय में निरंतर शोध परक वातावरण का निर्माण करती है। शोध समिति द्वारा महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों/ सहायक प्राध्यापकों के विगत पाँच वर्षों के शोधकार्यों के प्रकाशित कार्यों के अंतर्गत जानकारी जर्नल्स, पुस्तकों में एवं शोध संगोष्ठियों की स्मारिकाओं में प्रकाशन को पृथक-पृथक एकत्र की गई। अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठियों में प्रस्तुत शोधपत्रों की जानकारी इक्की कर उच्च शिक्षा विभाग को भेजी गयी। महाविद्यालय के सभी विभागों के शोधकार्यों की जानकारी शोध कार्यों द्वारा एकत्र कर अभिलेखीकरण किया गया। दिनांक 30.01.17 को गांधी जयंती पर 'चंपारण सत्याग्रह' पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार श्री अमरेन्द्र नारायण भूतपूर्व महासचिव एशिया पैसिफिक टेली कॉम्यूनिटी बैंकांक ने शोधपरक व्याख्यान दिया। अमरेन्द्र नारायण जी ने कहा चंपारण सत्याग्रह में राजकुमार शुक्ल की अहम भूमिका थी। उन्हीं के कहने पर गांधी जी चंपारण गये और उन्होंने वहाँ के किसानों की हालत देखी और उनकी स्थिति सुधारने के लिये प्रयत्नशील हुए। चंपारण सत्याग्रह ने ही गाँधी को नायक बनाया। चंपारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता अमरेन्द्र नारायण जी ने कहा 100 वर्ष पूर्व जन संचार के साधन नहीं थे, कम्प्यूटर मोबाइल जैसे तकनीकी संसाधन नहीं ने तब गांधी जी ने केवल आत्मबल के आधार पर चंपारण की अहिंसक लड़ाई और विजय पाई। वस्तुतः यह आम आदमी की लड़ाई

थी जिसमें भयमुक्त होकर, तमाम लालचों से परे जाकर भारतीयों ने अंग्रेजों का प्रतिरोध किया था। डॉ. अमरेन्द्र नारायण ने चंपारण सत्याग्रह को केंद्र में रखकर 'संघर्ष' शीर्षक से उपन्यास भी लिखा है। इसके लिए वे पांच वर्षों तक बिहार चंपारण में रहे वहाँ के लोगों से बातचीत की है। इसलिये अमरेन्द्र नारायण के इस व्याख्यान से चंपारण सत्याग्रह को कुछ ऐसे पहलू सामने आये जो किसी इतिहास की पुस्तक में दर्ज नहीं है। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि डॉ. चन्द्रा चतुर्वेदी ने कहा कि हमें चंपारण सत्याग्रह के विषय में पढ़कर प्रेरणा लेनी चाहिए और आज भी जो गलत दिख रहा है उसका एकजुट होकर विरोध करना चाहिए किसानों की समस्याएँ आज भी है उन्हें दूर करना होगा तभी यह शताब्दी वर्ष सही मायने में सफल होगा।

प्राचार्य डॉ. उषा दुबे सभी अतिथि का स्वागत किया साथ ही महाविद्यालय के शोध प्रकोष्ठ की गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ. उषा दुबे ने महात्मा गांधी के जीवन के प्रेरणा प्रसंगों के माध्यम से छात्राओं को सत्य अहिंसा अस्तेय, अपरिग्रह का महत्व समझाया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. कृष्णाकांत चतुर्वेदी ने कहा कि श्री अमरेन्द्र नारायण जी के उपन्यास का मूल स्वर भी है। यह संघर्ष हमें निर्भय बनने की प्रेरणा देता है। साहस का अवतरण ही चंपारणका आंदोलन है। इस कार्यक्रम में नगर के अनेक गणमान्य नागरिक महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सुधा मेहता, डॉ. आशा पांडेय, डॉ. जे.के. गुजराल, डॉ. अरुण मिश्र, डॉ. नीना उपाध्याय सहित अनेक प्राध्यापक तथा महाविद्यालय की एक सौ अड़तीस छात्राएँ उपस्थित थीं। कार्यक्रम संचालन शोध प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. स्मृति शुक्ला द्वारा किया गया।

(डॉ. स्मृति शुक्ला)